



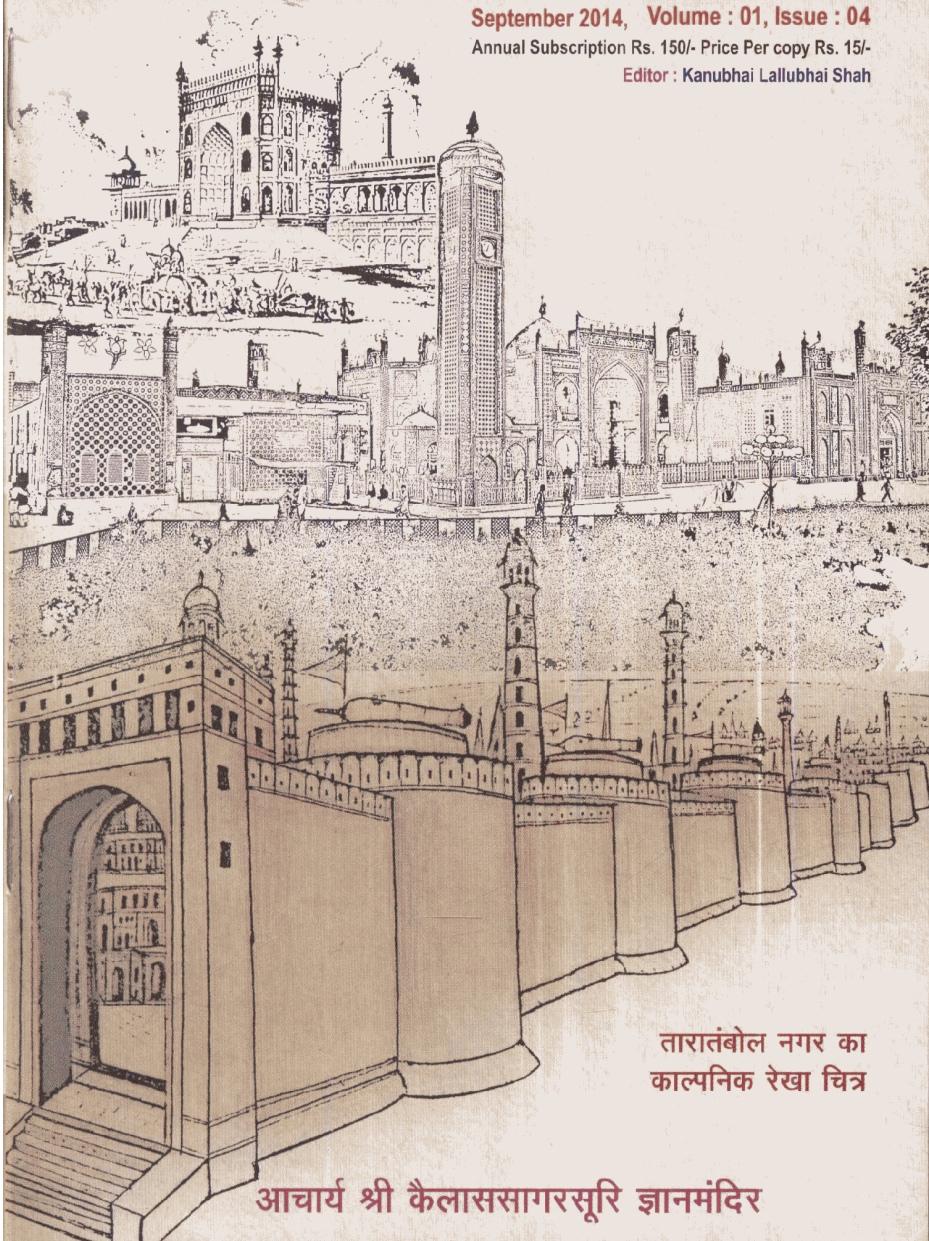
श्रुतसागर | श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

September 2014, Volume : 01, Issue : 04

Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

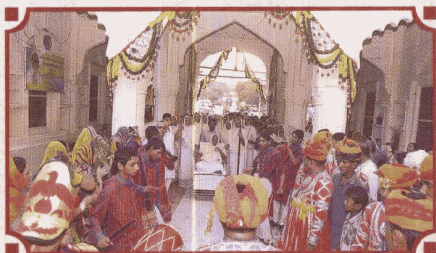
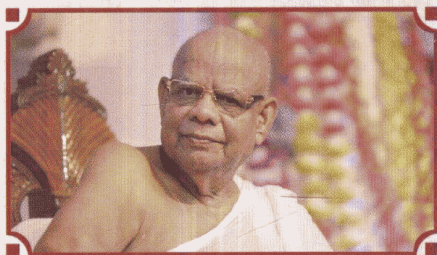
Editor : Kanubhai Lalubhai Shah



तारातंबोल नगर का
काल्पनिक रेखा चित्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

राजस्थान की पुण्यधरा श्री नाकोडातीर्थ में परम पूज्य गुरुभगवंतश्री का ८०वाँ जन्मदिवस के पावन प्रसंग की झलक



आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर

श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-१, अंक-४, कुल अंक-४, सितम्बर-२०१४ ❖ Year-1, Issue-4, Total Issue-4, Sept.-2014

वार्षिक सदस्यता शुल्क-रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Issue per Copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

❖ सह संपादक ❖

कनुभाई लल्लुभाई शाह

हिरेन के. दोशी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ सितम्बर, २०१४, वि. सं. २०७०, भाद्रपद वद-७



प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर-३८२००७

फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२ फेक्स: (०७९) २३२७६२४९

Website : www.kobatirth.org Email : gyanmandir@kobatirth.org

अनुक्रम

१. संपादकीय	हिरेन दोशी	३
२. गुरुवाणी	आचार्यश्री पद्मसागरसूरिजी	५
३. Beyond Doubt	Acharyashri Padmasagarsuriji	९
४. तारातंबोल नगर वर्णन	नविन वी. जैन	११
५. कृतिदंश परिचय	रामप्रकाश झा	२२
६. पुस्तक परिचय	डॉ. हेमन्तकुमार	२८
७. समाचार सार	डॉ. हेमन्तकुमार	३०

प्राप्तिस्थान :-

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
 तीन बंगला, टोलकनगर
 परिवार डाईनिंग हॉल की गली में
 पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७
 फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

संपादकीय

श्रुतसागरनो चोथो अंक आपश्रीना हाथमां छे.

जीवनने मांजी शकाय एवा समयनी शुभ घडी एटले पर्व..

वर्षनुं विशेष अने आराधनानुं सविशेष पर्व एटले पर्युषण महापर्व...

भारतभरना तमाम श्री संघोमां खूब सुंदर रीते आराधना साधना पूर्ण थई... ए तमाम सुकृतोनी आनंदानुमोदना...

आ अंकनी वात :-

गया अंकमां प्रकाशित वाक्-संयम अंगे पूज्य गुरुभगवंतश्रीए आपेल प्रवचननो आगळनो भाग आ अंकमां प्रकाशित कर्यो छे. तो साथे-साथे वाचकोनी मांगणीने अनुसार पूज्य गुरुभगवंतश्रीए आपेल प्रवचनोने गुजराती अने अंग्रेजी भाषामां पण प्रकाशित करवानुं प्रारंभ कर्युं छे.

आ अंकमां पद्यात्मक कृतिना बदले अप्रकाशित कृतिनी श्रेणिमां तारातंबोल नगरनो परिचय करावता चार पत्तो तेमज जैन सत्य प्रकाशमां अलग-अलग वर्षोमां प्रकाशित थयेला बे पत्तो एम कुल छ पत्तो अत्ते प्रकाशित कर्या छे. अत्ते प्रकाशित पत्तो ए मात्र कोई नगरनो के एक नगरथी बीजा नगरना अंतर मालनो उल्लेखात्मक परिचय नथी, पण ते ते नगर के गामनी साथे दूर-दूरना देशांतरोमां पण जिनधर्मनुं विस्तरण अने माहात्म्य जाणी शकाय छे. आ नगरी अने एनी आखी व्यवस्था विशेष सचोट पुरावा शोधवाना बाकी छे. वाचकोनी उपादेयता अने शोधप्रवृत्ति माटे आ पत्तो प्रकाशित कर्या छे. लेखना अंतभागे छए पत्तो नो एक कोठो आप्यो छे. जेथी वाचकोने सरळता रहे...

ज्ञानमंदिरनी कार्य प्रणाली श्री संघमां प्रचलित अने प्रसिद्ध छे. सौ कोई अहींनी श्रुतसेवाथी प्रसन्न छे. वाचकोने श्रुतभंडारमां रहेला पुस्तकोनी माहितीओ सरळताथी मळी शके ए माटे एक अनोखु अने आगवुं कही शकाय एवुं एक Software बनावुं छे. आ प्रोग्राममां विविध प्रकारनी विशेषताओनो व्यापक द्रष्टिकोणथी समावेश करवामां आव्यो छे. एमांनी एक विशेषता एटले Kruti Tree एटले कृतिवंश...

पुस्तक, हस्तप्रत के मेगेझिनमां प्रकाशित/लिखित माहितीओ प्रोग्राममां कया

SHRUTSAGAR

4

SEPTEMBER-2014

स्वरूपे संगृहीत थाय छे. तेमज एनाथी केवा अने केटला विविध लाभो श्री संघने अने वाचकवर्गने थई शके छे ए जणाववा माटे एवी दरेक विशेषताओ उपर सरळ भाषामां ज्ञानमंदिरना लायब्रेरी प्रोग्रामनी माहितीओ यथावसरे लेख स्वरूपे प्रकाशित थती रहेसे. एमानो पहेलो मणको कृति वंश परिचय प्रस्तुत अंकमां प्रकाशित कर्यो छे.

तो साथे-साथे जीवन व्यवहारमां अने अध्यात्म जीवनमां उपयोगी थाय एवुं एक पुस्तक एटले 'जैन आचार मीमांसा में जीवन प्रबन्धन के तत्त्व' नो संक्षिप्त परिचय प्रकाशित कर्यो छे.

नोंध :- प्रस्तुत अंकना मुख्य टाईटल उपर प्रकाशित तारातंबोल नगरनुं परिचायक रेखा चित्र सम्राट संप्रति संग्रहालय विभागमांथी साभार अत्ते प्रकाशित कर्युं छे.



क्षमापना

वीरनुं भूषण अने सज्जननुं आभूषण गणाय एवुं तत्त्व छे क्षमा...
तलवारनी धार करता जेनो प्रभाव वधु छे एवुं उपास्य तत्त्व छे
क्षमा...

मैलीनी महेंक अने घीना दीवाना सौम्य प्रकाशनी उपमा आपी
शकाय एवुं तत्त्व छे क्षमा...

क्षमापनाना आ पर्व निमित्ते वीतेला वर्षना काळ प्रदेश उपर समयना
सथवारे तमारी साथे यात्रा करता करता श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
परिवार तथा आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार तरफथी
तमारा मनोभावने स्हेज पण दुःख थयुं होय तो पर्वाधिराजना आ पावन
पर्वने पामीने आपश्रीने सांवत्सरीक मिच्छामिदुक्कडम् पाठवीए छीए.

गुरुवाणी

आचार्य पद्मसागरसूरि

वाक्-संयम

सियार जब उस लाश के पास आया और सूँघकर देखने लगा; योगी की दृष्टि भी वहाँ पर गई। उसे मालूम पड़ा कि सियार आया है। वह इस लाश को खायेगा, भक्षण करेगा। दूर से ही योगी पुरुष ने अपने अन्तर की करुणा से कहा-

रे रे मुञ्चक मुञ्च सहसा, नीचस्य निद्यवपुः

योगी पुरुष ने दूर से देखकर उस सियार से कहा कि अवश्य ही तुमने पूर्व जन्म में कोई ऐसा अपराध किया होगा जिसका वह वर्तमान परिणाम है। इतनी निकृष्ट योनि में, पशु योनि में तुम्हारा जन्म हुआ है। यदि अब तुमने ऐसे गलत व्यक्ति की लाश को खाया तो भविष्य में तुम्हारी क्या गति होगी? यह भयंकर पापी आत्मा है। जीवन में कभी धर्म कार्य इसने किया नहीं। इसका सारा मनुष्य-जन्म निष्फल गया है। इसका सारा जीवन पाप-प्रवृत्ति से भरा हुआ रहा। ऐसी दूषित आत्मा की लाश है यह। इसे खाना छोड़।

सियार ने कहा - भगवन्! आपका आदेश तो उचित है परन्तु मुझे भूख इतनी सता रही है कि जीना दुष्कर हो गया है। बड़ी मुश्किल से यह लाश मिली है। इसे भी आप मना कर रहे हैं। मुझ पर दया करिये। केवल थोड़ा-सा आहार का आधार मिल जाये, तो मुझे बड़ा सन्तोष होगा। इसकी यदि आँखें खा लूँ तो क्या हर्ज है? छोटी-सी आँख है। इस आँख ने क्या पाप किया होगा?

योगी पुरुष ने सियार से कहा -

‘नेत्रे साधु विलोक रहिते,’

इस आँख ने कभी सन्तपुरुषों का दर्शन नहीं किया। इसकी दृष्टि मात्र लोगों के दुर्गुणों पर गई। काक दृष्टि कैसी होती है? कौए की नजर जाती है गन्दगी पर। हमारी दृष्टि का यह विकार हमारे जीवन का विनाश करता है। हर व्यक्ति के दुर्गुण पर ही हमारी दृष्टि जाती है ह्यूमन साइकोलोजी है। मानवीय मनोविज्ञान है। आप यदि अपने मकान के अन्दर एक दम हाइट पेपर, सफेद कागज, बोर्ड पर लगा दें और मैं उसके बीचों-बीच काला बिन्दु रख दूँ, तो आप सच कहें कि नजर कहाँ जायेगी? बिल्कुल केन्द्र में, सेन्टर में मैंने जहाँ काला बिन्दु लगा दिया है, सबकी नजर वहीं जायेगी।

यह अनादिकाल का संस्कार है। ९९ प्रतिशत उसमें एकदम ह्वाइट पेपर है, सफेद कागज है। एक पर्सेन्ट यदि मैंने ब्लैक स्पॉट कर दिया, काला निशान बना दिया, नजर उस काले निशान पर जायेगी। ९९ प्रतिशत जो निर्मल है, स्वच्छ है, वहाँ नजर नहीं जायेगी।

यही हमारी आदत है, किसी व्यक्ति में हजार गुण हों, वहाँ हमारी दृष्टि नहीं जायेगी। परन्तु जहाँ जरा-सा भी दुर्गुण झलक जाये, हम झट वहाँ पर दृष्टि टिका लेंगे। अपवाद या अवर्णवाद बोलकर अपनी जीभ गंदी करेंगे और तुरन्त पर-निन्दा के आश्रित बन जायेंगे।

योगी पुरुष ने कहा- 'नेत्र साधु विलोकरहिते' इस आँख से कभी साधु पुरुषों का दर्शन ही नहीं किया, परदोष दर्शन में ही इसकी दृष्टि रही। अतः दृष्टि इसकी मलिन बनी रही। कभी प्रभु का दर्शन नहीं किया। विकार से भरी इसकी दृष्टि ने कभी अपने आप को नहीं देखा। यह हमेशा पर दृष्टि में रहा। लोग क्या करते हैं? यही देखने में जीवन चला गया। मेरे अन्तर जगत् में क्या है? यह देखने का प्रयास ही नहीं किया। अपने को देखने की दृष्टि प्राप्त नहीं की।

दृष्टि निर्मल होनी चाहिये। परमात्मा ने कहा-गिद्ध दृष्टि चाहिये। गिद्ध की दृष्टि बहुत गहरी होती है। बहुत ऊँचाई से वह अपनी वस्तु को देख लेता है। उसी तरह से हमारे जीवन में दृष्टि होनी चाहिये। वर्तमान में रहकर भी मैं अपने परलोक को देख सकूँ। कल्पना कर सकूँ कि मेरा कार्य मुझे कहाँ पहुँचायेगा, किस प्रकार की मुझे गति मिलेगी? वर्तमान में इस प्रकार से देखना, यह दूरदृष्टि या गिद्ध दृष्टि है।

सियार चुप रहा, परन्तु क्या करे, वह भूख से लाचार था। उसने कहा 'भगवन्! और कुछ नहीं, कान खाँ, लूँ तो क्या है? कान ने क्या पाप किया है? छोटे-से कान यदि मैं भक्षण कर लूँ तो मुझे थोड़ी सी तृप्ति मिल जायेगी। मानसिक सन्तोष मुझे मिल जायेगा।

‘सारश्रुतौ द्रोहिणौ’

योगी पुरुष ने गर्जना करके कहा-इस कान ने कभी भला श्रवण नहीं किया। पर-निन्दा का ही श्रवण किया है। जगत् की चर्चा का ही श्रवण किया है, कभी धर्म कथा या प्रवचन से इसने इस कान को पवित्र नहीं किया। ये कान खाने योग्य नहीं, तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी, तेरी सारी पवित्रता भी चली जाएगी, मेरा यह आदेश है, तू इसे खाने का विचार छोड़ दे।

(क्रमशः...)

ગુરુવાણી (આત્મામાં લીન બનવું તે યોગ)

આચાર્ય પદ્મસાગર સૂરિ

- ❖ દવા શરીર ઉપરના રોગોને દૂર કરે છે તેવી જ રીતે ભગવાનની વાણી, સંતોના શબ્દો આત્મામાં પડેલ વિષય-કષાયોરૂપી રોગોને દૂર કરે છે.
- ❖ જગત આખું ત્રણ પર્યાયમાં આવી જાય છે. આ જગતમાં પદાર્થો ઉત્પન્ન થાય છે. નાશ પણ થાય છે અને મૂળ રૂપે તો જગતના સર્વ પદાર્થો સ્થિર છે. જેમ કે માણસનો જન્મ થાય તે ઉત્પત્તિ કહેવાય, મરી ગયો તે નાશ અને મૂળ સ્વરૂપે રહેલો આત્મા તો અમર જ છે. તે તો કદી મરતો નથી. આત્મા સ્થિર છે એવી જ રીતે સર્વે પદાર્થોને ગણવા.
- ❖ આત્માની અંદર શોષ કરવાથી આત્માની પ્રાપ્તિ થાય છે. પરમાત્મા અરૂપી છે તે આંખથી દેખાતા નથી. પણ જ્ઞાનદૃષ્ટિથી આત્મામાં તેની અનુભૂતિ થાય છે.
- ❖ યોગ એટલે મન, વચન અને કાયાને સ્થિર કરી દેવાં ને પછી આત્મામાં લયલીન બની જવું. તે યોગ પણ જીવનમાં મહત્વનો ભાગ ભજવે છે. યોગ આત્મદશામાં સ્થિર કરે છે.
- ❖ જ્યારે આત્માનો સાચો અનુભવ થાય છે ત્યારે સર્વ પ્રકારનાં દુઃખો શાંત થઈ જાય છે અને જ્યારે આત્મામાં આનંદના કુવારા કુટે છે ત્યારે આત્મા સાચો યોગી બની જાય છે.
- ❖ જંગલ કે બગીચાને પાણી ન મળે તો તે સુકાઈ જાય છે અને ફળ મળતાં નથી. એવી જ રીતે જીવન એ બગીચો છે. તેને પ્રવચનરૂપી પાણી ન મળે તો તે સુકાઈ જાય છે અને મોક્ષરૂપી ફળ મળતું નથી.
- ❖ જ્યાં આત્મચિન્તન હોય ત્યાં ચિન્તા હોય જ નહીં અને જ્યાં ચિન્તા છે ત્યાં ચિન્તન પણ ન હોય.
- ❖ ખરેખર જીવ એમ વિચારે કે હું અહીં ક્યાંથી આવ્યો છું, શું કરી રહ્યો છું, કેટલો રહેવાનો છું, ક્યારે અને ક્યાં જઈશ તો જરૂર વૈરાગ્યભાવ આવે.
- ❖ માણસ વર્તમાનનો વિચાર કરે છે પણ ભવિષ્યકાળનો વિચાર કરતો નથી, ભૂતકાળને દેખતો નથી પણ વર્તમાનમાં જો ભવિષ્યનો વિચાર આવી જાય તો આત્મામાં તુરત જ સ્થિરતા આવી જાય છે, પાપનો વિચાર નાશ થઈ જાય છે.
- ❖ ખરાબ વિચાર કરવા એટલે હિન્સાના વિચારો કરવા. બીજાને મારી નાખવાના વિચારો કરવા તે રૌદ્રધ્યાન છે. એ ધ્યાન જે જીવ કરે તે નરકમાં જાય છે અને ત્યાં ભયંકર દુઃખો ભોગવે છે માટે એવા ધ્યાનમાં મનને ન ફસાવા દેવું.

ધર્મ ધમાલમાં નથી

❖ સામાયિકમાં ચિન્તન અને મનન કરવાનું છે, સામાયિકમાં સંવાદમય તત્ત્વ મળે છે. પ્રભુ મહાવીર ગૌતમને કહે છે કે તારી ઈંદ્રિયોને તું કાચબાની માફક વાપર. જ્યારે ભય આવે ત્યારે કાચબો પોતાની બધી ઈંદ્રિયોને સંકોચી લે છે તેમ પાપ કરવાનો ભય લાગે ત્યારે મોઢું, કાન, બધું બંધ કરી પ્રભુનું સ્મરણ કરવું.

❖ ધમાલની અંદર ધર્મ છે જ નહિ. સાધના દ્વારા શુદ્ધિ અને શુદ્ધિ દ્વારા સાધના કરવાની છે. અંતરનું વલોણું કરી કરીને આત્મશુદ્ધિ કરવાની છે.

❖ જત્રામાં સંઘ ચાલ્યો ત્યારે એક શાંતિપ્રિય ભાઈએ કહ્યું કે હું મારી જવાબદારીથી જત્રામાં આવી શકું તેમ નથી પણ એક તુંબડું આપ્યું અને કહ્યું કે આ તુંબડાને બધે સ્નાન કરાવીને, જત્રા કરાવીને પવિત્ર કરાવજો.

જત્રા કરીને પાછા આવ્યા ત્યારે પેલા ભાઈએ પોતાનું તુંબડું પાછું માગ્યું અને જત્રા કરીને આવેલાને સાદું ભોજન જમાડ્યું. આપણે જીવનમાં જેમ બને તેમ સાદાઈને લાવવાની છે. સાદાઈથી જીવન શાંત અને શુદ્ધ બનશે. જમાણમાં પેલી તુંબડીનું શાક કર્યું: તુંબડી એકદમ કડવી હતી. તુંબડીનું શાક ખાઈને બધાંનાં મોઢાં કડવાં થઈ ગયાં.

પેલા ભાઈએ કહ્યું કે આ તુંબડી ઘણી નદીઓમાં સ્નાન કરીને આવી છતાં પણ મીઠી ન થઈ તો આપણું અંતર પણ ઘણી જત્રા કરે છતાં અંતરને શુદ્ધ ન બનાવે તો જત્રા કર્યાનો ફાયદો શું? પહેલા તો સામાયિક સમતાથી અંતરને શુદ્ધ કરવાનું છે.

❖ લોકો સદ્ગુણને, સારી વસ્તુઓને યાદ કરે છે, બળવાન કે પૈસાદારને કોઈ યાદ કરતા નથી. સુંદર ફર્નીચર હોય અને સુંદર બ્લોક હોય છતાં અંતરમાં શાંતિ ન હોય તો એ બ્લોક શું કરવાનો?

❖ ધમાલમાં અને ધમાલમાં જીવનને પૂરું કરી નાંખવાનું નથી. જીવન જીવવામાં આત્માનો પૂરેપૂરો વિચાર કરવાનો છે. આપણું જીવન રાગ-દ્વેષ-વેર-ઝેર-ઈર્ષ્યા અને માનમાં પૂરું કરી નાંખવાનું નથી પણ ધીમે ધીમે દુર્ગુણોને બહાર કાઢવાના છે.

Beyond Doubt

Acharya Padmasagarsuri

The great Omniscient¹ Lord, the last of the twenty four Thirthankars, the Lord of Lords, Lord MAHAVIRA had eleven major disciples who are called Ganadharas². Prior to being Ganadharas, they were eminent scholars of Vedas, but still each one had some doubt or the other based on the Vedic tenets. In the very first meeting, (acquaintance), the Lord had their doubts thoroughly cleared after a discussion and it was this discussion that came to be popularly known as 'GanadharaVada'.

The Pavapuri city of India today was a great city called 'Apapa' in those days. A brahmin named Somil once organized a very big Yagna i.e. sacrificial ceremony and invited distinguished scholars to make the ceremony a great success. Somil called upon the eleven Brahmin pundits (scholars) who brought along with them four thousand four hundred students and made the ceremonial place a very busy and ceremonious one.

Indrabhuti, Agnibhuti, Vayubhuti, Vyaktabhuti, Sudharma, Mandita, Mauryaputra, Akampita, Achalabhrata, Metarya and Prabhasa were the eleven Vedic scholars who came to glorify the holy function. Although each one had some doubt or other, each one regarded himself as an omniscient; overpowered by their ego, they never presented their doubts for clarification for the fear of being labelled as less knowledgeable and insignificant to the one who cleared their doubts and moreover their ego would have got a major blow. Each one could have got his doubt cleared if they desired, by presenting it before the others, for each one had a different doubt, but their ego-laden minds kept them silent and their doubts lay suppressed in their minds.

1. Kevali, 2. Prime Disciples

It was during this time that Lord Mahavira arrived in Pavapuri when the great Yagna was organised and the heavenly beings i.e., the devas erected a Samavasarana¹ for the Lord.

To pay their obeisances and hear the holy discourse, the Gods came in their aerial vehicles². Seeing this, Indrabhuti, the chief scholar was illusioned to believe that the Gods arrived there due to the unprecedented greatness of the Yagna³ and that they too were desirous to participate in the ceremony.

But when the Gods moved their chariots ahead of the ceremonial place, Indrabhuti was shaken and shattered in belief and this incident left Indrabhuti wondering and contemplating on the blunder committed by the gods. He wondered if the gods had mistaken the ceremonial place. He was also proud that huge crowds had come from far off places to attend the Yagna. Along with eleven great scholars and 4400 students, thousands of great Brahmin scholars like Shankar, ShivShankar, Krishnadas, Govindram and others had come to grace the occasion and the whole atmosphere was colourful and pompous. He wondered if the gods had lost their balance of mind and became bankrupt in their divine knowledge. Ordinary people commit mistakes owing to their limited knowledge, but it is not understandable how these gods possessing Avadhi Gyanana (clairvoyance knowledge) commit such a mistake.

In the meantime, one of the proceeding Gods said to another. "We have to go hurry to the Samavasarana, so as not to miss even a little part of the discourse of the last Thirthankara of this Kaal. Let it not happen that we miss even a single word of His divine speech."

(Continue...)

1. Place of Sermon of Thirthankars, 2. Heavenly Chariots, 3. Sacrificial ceremony.

तारातंबोलनगरी वर्णन

नविन वि. जैन

प्रस्तुत लेख संग्रहमां अलग-अलग ग्रंथोमांथी लेखोनुं संकलन करवामां आव्युं छे, अलग-अलग नगरीओना नामो, अंतर तेमज नगरीओनुं माप, त्यांनी बीजी पण जाणवा जेवी अनेक रोचक बाबतो आपवामां आवी छे, एनी सत्यासत्य हकीकत उपर वाचक वर्ग विचार करे अने इतिहासना अभ्यासीओने ए संबंधी कंइक शोध-खोळ करवामां उपयोगी थशे ए हेतुथी अहीं प्रगट करवामां आव्या छे.

प्राचीन तारातंबोलनगरीनुं ऐतिहासीक वर्णन

तारातंबोल नगरीनुं वर्णन करतां नीचे मुजबना केटलाक हस्तप्रत ग्रंथो आ.श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरना संग्रहमांथी मळ्या छे. प्राचीन माहितीओ ऐतिहासिक अने उपयोगी जणाय छे. अगाउ जैन सत्यप्रकाश मासिक वर्ष-४ अंक-३ मां संग्राहक-मुनिराज श्री कांतिसागरजी द्वारा अने बीजो पत्र वर्ष-६ अंक-६ मां संग्राहक-श्रीयुत सागरमलजी कोठारी द्वारा प्रकाशित करवामां आवेल छे ए बन्ने लेखो अने अहीं प्राचीन ग्रंथोमांथी आपेल माहितीमां केटलीक साम्यताओ साथे केटलीक माहितीओमां खास्सो तफावत छे. श्रीसागरमलजीना लख्या प्रमाणे तेमना ज शब्दोमां “कुछ मास पूर्व ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ में तारातंबोलनगर विषयक पत्र प्रगट हुए थे। उस समय कहा गया था कि अगर अन्य किसी ग्रंथ में इस घटना से सम्बन्धित साहित्य हो तो प्रकाश में लाया जावे ताकि इस सम्बन्ध की ऐतिहासिक खोज की जाय”। तेओना आ कथनथी आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानभण्डारमांथी मळेल हस्तलिखित प्रतोना आधारे नीचे मुजबना जुदा-जुदा ग्रंथोमांथी, ग्रंथनी भाषा यथावत् राखी माहितीओनुं संकलन करवामां आव्युं छे. जे संशोधननी दृष्टिए पण आनु शुं मूल्य होई शके ए जोवानुं रहे छे. छतां आ वर्णनो भाषानी दृष्टिए के एवी बीजी कोई दृष्टिए विद्वानोने उपयोगी थई पडशे एम लागवाथी अहीं तेने प्रस्तुत करवामां आव्या छे.

१

प्रत नं. ३७३३९ पत्रांक नं. १A-२A

॥ अथ तारातंबोलनगररी वात लिखीयै छै ॥

संवत् १६८४ मिति मिगसर वदि १३ पातसाह श्रीसाहजांह दिल्ली राज करै ते समै की बात छै मुलतांन को वासी जात को ष(क्ष)ती नाम ठाकुर वुलाकी तिहां देसां

SHRUTSAGAR

12

SEPTEMBER-2014

की वात आपकी निजर देख आयो ताकी ए वात नकल छै ॥

१. प्रथम देस गुजरात मध्ये श्रीअहमदावाद नगर तासुं कोस ३०० मुलतांन छै
२. मुलतांनसुं कोस १५० लाहोर छै
३. लाहोर सेती कोस ३०० खंधार छै
४. खंधारसुं कोस ९०० इसफानगर छै ताको वाजार कोस १२ लाबो छै
५. इसफानगर सेती कोस ६०० खुरासान छै खुरासान को वाजार कोस १५ लांबो छै

६. खुरासानसुं कोस १२०० इसफतंबोलनगर छै तिहां को बाजार कोस ३६ लांबो छै कोस २४ चोडो छै तिहां रोमी पातिसाह राज करै छै घोडा २४ लाख छै हाथी १ एक लाख पचीवीस हजार छै तीनलाख गुलाम छै पांचलाख वादी छै एक किरोड पंचवीस लाख पादा छै नगर कै चोफेर कोट चोकोर छै पातसाह की रहास को कोट तांबा को छै.

७. इसफतंबोलसै कोस १४०० चवदसै वव्वरदेस छै तिहां सपेद रेसम होवै छै सो माणस का लोही मै रंगीजै छै किरमची पाट रंगीजै छै

८. तिहां सेती कोस ५० आकलनगर छै

९. आकलनगरसै कोस ७०० तारातंबोल छै नगर छै तिहां माहाराजा श्रीसूरचंदजी राजा राज करै छै नगर को बाजार कोस ४० लांबो छै कोस ३६ चोडो छै नगर चोगरद कोट तांबां को छै कोटि माहिला रूपा का छै वाकी सोना का छै तिहां राजा जैनधर्म पालै छै तिहां नगर मै देहरा सोना का छै देहरा सातसै ७०० सिखरबंध छै तिहां नगर मध्ये वीच चोक छै तिहां देहरो श्रीआदिनाथजी को छै कोस २ कै विस्तार मै छै देहरै कौ पूठो सोना को छै ओर देहरा को काम रूपा को छै थांभा देहरा का सोना का छै प्रतिमा सोना की छै प्रतिमा ऊंची धनुष्य ६ मण १०८३ तोल की छै वेदी सोना की छै संघासन जडाव को छै देहरा ऊपर कलस मण सातसै (७००) को छै सोना कै देहरा कै आसपास बहुत देहरा छै तिहां प्रतिमा तीन ३ चोवीसी की छै तिहां लिकाल पूजा हुवै छै स्रात्र नाटक भगवांन कै आगै होय छै साधु रहै छै राजा नित्य वखांण सुणै छै राजा साधानै आहार पांणी दैनै भोजन करै छै इसी भांति जैनधर्मरी थित छै तारातंबोल पास सिंधु नदी वडै विस्तार मै वहै छै अहमदावाद नगर हुंती तारातंबोल नगर कोस ५६५० छै तिहां की वात सत्य छै ताकी नकल छै.

॥ इति तारातंबोल नगररी वार्त्ता संपूर्ण ॥

श्रुतसागर

13

सितम्बर-२०१४

लि.। पं.। धर्मचंद्र ग्राम राहसर मध्ये ॥ सं१९०७ रा मिति चैत्र वदि ११ दिने लिखत ॥

प्रतिलेखक परिचय-पं.। धर्मचंद्र सं.१९०७ विद्वाननो विशेष परिचय उपलब्ध नथी. प्रतिलेखन वर्ष-वि.सं.१९०७ रा मिति चैत्र वदि ११ दिने. प्रत लखायानो उल्लेख छे. प्रतिलेखन स्थल-ग्राम राहसर मध्ये. प्रत परिचय-प्रत नं.३७३३९. जे संपूर्ण छे, प्रतमां बे कृतिओनुं आलेखन थयेल छे. प्रतनुं माप-२६x१२ से.मी. छे. कुल पत्र संख्या-२, प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या १०, प्रति पंक्ति अक्षर लगभग ३० छे, अक्षर साधारण सारा छे.

२

प्रत नं.२८५५३ पत्रांक नं-१A

संवत् १६८३ वर्षे पातशाह शिहायान राज बिठा तिह्वार पछी मुलतान वासी ठांकर बुलाकीना मुखथी शांभली दूरदेशांतरथी आव्या तिहूणे वार्ता लखावी :

१. श्रीअहिमदावादथी ३२५ कोसे आगरो तिहांथी

२. ३०० कोसे लाहोर तिहांथी

३. १५० कोसे मुलतांन तिहांथी

४. ३०० कोसे खंधार तिहांथी

५. ९०० कोसे इसपांनगर तिहां तिलंगी पातसाह राज्य करें छैं तिहांथी

६. ७०० कोसे सांमनगर तिहांथी

७. ८०० कोसे सासतानगर ते नगर बार कोसनं विस्तारें छैं तिहांथी

८. ६०० कोसे खुरासाणनगर ते कोस १५ नें विस्तारें नगर छैं: ते नगरनो बिजार ४८ कोस प्रमाण विस्तारें छैं तिहां रोमी पातसाह राज्य करें छैं ते छ मासि बाहर निकलै छैं ते पातसाहनं २४००००० कटक छै: ३००००० लुंडा^१ छै लोहना कोठानो कोट छै: तिहांथी

९. ५०० कोसे बबरकोट छै देश छै: तिहां मनुष्य रूधीरस्यू हीर रंगें छैं तिहांथी तारातंबोलनगर छै तिहां सूरचंद्रराजा राज्य करें छै ते नगर ४० कोसनं विस्तारे छै : तिहां पश्चिम समुद्र कोठो^२ ढुकडो^३ छैं तिहां जिनधर्म छइ प्रसाद पौषधशाला स्तुभादिक जैनमंडित पृथ्वी छै साधु^१ साध्वी^२ श्रावक^३ श्राविका^४ छैं तिहां जैनधर्म घणो छैं

१. गुलाम, २. किनारो, ३. नजीक.

ततोदयप्रभसुरि(उदयप्रभसूरि) नामा आचार्य्य छैः तत्र सर्व जैनमय छैः पछे तो परमेश्वर जाणे : वर्ष १० नो भोजक गयो हतो ते वर्ष ८० थयां दूर देशांतर फरतां-फरतां वृध थयो वर्ष ९० नो त्यारे इहां आवी सर्व वार्त्ता लखावी ते सही छैः :

प्रतिलेखन पुष्पिका :- संवत १७८५ ना वर्षे माहशुदि ९ दिने वार भृगुई(शुक्रवार) लख्युं छै आगलोड मघे शुभं भवतु:

प्रतिलेखक परिचय-प्रतिलेखक विद्वाननुं नाम उपलब्ध नथी. प्रतिलेखन वर्ष-वि.सं.१७८५ ना वर्षे माह शुदि ९ दिने वार भृगुई (शुक्रवार) दिने प्रत लखायानो उल्लेख छे. प्रतिलेखन स्थल-आगलोड मध्ये. प्रत परिचय-प्रत नं. २८५५३ जे संपूर्ण छे, प्रतमां त्रण कृतिओनुं संकलन थयेल छे. प्रतनुं माप-२१x१२ से.मी. छे. कुल पत्र संख्या-१, पंक्ति संख्या १७, प्रति पंक्ति अक्षर लगभग ३२ छे, अक्षर सारा-वाच्य छे.

३

प्रत नं.१९० पेज-१A

१. लाहोरथी गाऊ १५० मुलतान तिहांथी

२. गाउ ३०० खंधार तिहांथी

३. गाउ ९०० इसपन्न तिहां तिलंगी पातिसाह राज्य करै छइं तिहांथी

४. गाउ ७०० सामनगर तिहांथी

५. गाउ ८०० सताननगर बारकोस को नगर तिहांथी

६. गाउ ६०० खुरासाण कोस पनर को नगर तिहांथी

७. गाउ २०० ईसतंबोल बहोतर ७२ कोस को नगर ४८ कोस को बाजार रोमी पातिसाह राज्य करै छइं छट्टें महिने बाहिर नीकलै छै चोवीस लाख २४ कटक त्रिणलाख गुलाम ३ लोहनो कोट तिहांथी

८. गाउ ५०० बबरकोट जिहां हीर थाइं छै तिहांथी

९. गाउ ७०० तारातांबनगर राजा सूरचंद राज्य करै छइं ४० कोस को नगर तांबा को कोट छै २४ कोस को बाजार सुवर्ण मै देहरा रत्ननी प्रतिमा छइं तिहां जैनधर्म छइं ते सही ए वात क्षती बुलाखीदास मुलताननो वासी ते जई आव्यो तेपें कह्यो ते लिख्युं छै सही तिहांथी आगै समुद्र नजीक छै लाहोरथी साढाछप्पनसें गाउ जईइं तिवारै जैनधर्म पांमीई ते सही करी मानज्योजी इति संपूर्ण. छ: छ:.....

मूल प्रतना प्रतिलेखकनो परिचय-नाम-गणि श्री ईसरविमल छे. तेओश्रीना

श्रुतसागर

15

सितम्बर-२०१४

स्वहस्ते लखायेल अन्य बे प्रतो पण ज्ञानमंदिरमां उपलब्ध छे. जेना नं. १३७८ तथा १३५२७ छे. आ बन्ने पण सं. १७६२मां लखायेल छे. तेमां प्रस्तुत प्रत तथा १३७८ बन्ने प्रत व्रघ्नपुरमां बे-त्रण दिवसना अंतरे लखायेल छे. अपभ्रंश ईसरविमलनी साथे अन्य प्रतमां शुद्ध नाम ईश्वरविमल पण मळे छे.

प्रतिलेखन वर्ष-वि.सं.१७६२ पोस सुदि पंचमी तिथी रविवासरे. प्रतिलेखन स्थल-व्रघ्नपुर. प्रत परिचय-प्रत नं.१९० जे संपूर्ण छे, प्रतमां कुल-४ कृतिओनुं संकलन थयेल छे. आ कृति पाछलथी लखायेल छे. प्रतनुं माप-२५x१२ से.मी. छे. कुल पत्र संख्या-२७, अक्षर वाच्य छे.

४

प्रत नं.२८२८२ पेज-३B-४A

॥ संवत १६८४ वर्षे महा सुदि १३ भौमें ॥ पातस्याह साह जिहान राज्ये बेठां ते पाछलि वार्ता छइ: । मुलताननो वासी जाते षीली नामे ठाकुर बलाखी ते दुर देसांतर देखी आव्यो तणे जें वात कही ते लखीइ छइ: ॥

१. प्रथम गुजरात मध्यें श्री अहम्मदावादथी ३०० कोस आगरो छें तेहथी

२. ३०० कोस लाहोर तेहथी

३. १५० कोस मुलतान तेहथी

४. ३०० कोस खंधारि तिहाथी

५. ९०० कोस ईसपन्नगर छे. तिहां तिलंग पातस्याह राज्य करे छे. तेहनो बाजार १२ कोसनो लांबो छें तेहथी

६. ६०० कोस खुरसाण छें तेह बाजार १५ कोसनो लांबो छें तेहथी

७. १२०० कोस अस्तंतबोल नगर छें ते नगर ३६ कोसनो लांबो छें २४ कोसनो चोडो छें तेहनो २४ कोसनो बाजार लांबो छें तिहा रुमि पातस्याह राज्य करे छइ: ते छट्टे मासे बाहिर निकले छे ते पातस्याहनें २४ लाख घोडा छें १२। लाख हाथी छें ३ लाख गुलांम छे ५ लाख बांदी छें एक कोडि २५ लाख पायदल छे. नगरनें आसपास चोकफेर लोहनो कोट छें पातस्याही कोट लांबानो छे तेहथी

८. ५०० कोस बबर देस छें तिहां सपेत हीर माणसनें रुधीरें रंगाय छें देस मोटो छें ५०० कोसनो लांबो छें तेहथी

९. ७०० कोस तारातबोल नगर छे वैताढ्यना विद्याधरनो वासो छें तिहां

રાજાધિરાજ રાજા મહારાજા શ્રી સુરચંદ્ર રાજ્ય વિદ્યમાન કરે છે તે નગર ૪૬ કોસ(સે?) લાંબો છે ૩૬ કોસનો ચોડો છે ૪૮ કોસનો બાજાર લાંબો છઠ્ઠ નગરને આસપાસ ચોકફેર કોટ લાંબાનો છે. (રાજાને?) આસપાસ કોટ અષ્ટઘાતુનો છઠ્ઠ: તિહા રાજા જૈન ધર્મ પાલે છે તિહાં સર્વ (જૈન દેહરા જ છે સર્વવિદ્?) ભાષિત ધર્મ છઠ્ઠ તિહાં જૈનના દેહરા ૭૦૦ સિંચરબંધ છઠ્ઠ પંક્તિબદ્ધ બાજાર મૈં બેહુ તરફ છે (તે નગરને મધ્ય?) મોટો ચોક છે. તે ચોકને મધ્યે શ્રી આદિનાથજીનો દેહરો છે. બે ૨ કોસનો વિસ્તાર છે તે દેહરાનિ (પીઠીકા સોનાની છે.?) ઉપરિં કામ રુપાનો છઠ્ઠ થંભા સોનાના છઠ્ઠ: પ્રતિમા સોનાનિ છઠ્ઠ: પ્રતિમા કાઠસગ્ગે છે પ્રતિમા એકસો આઠ ધનુષની છઠ્ઠ: ઊચી છઠ્ઠ: બિંદી સોનાનિ છઠ્ઠ: સિહાસન જઢાવનો છે દેહરાને આસપાસ ૭૨ ચૈત્યાલય છે તેલ પુજા થઈ છઠ્ઠ: (એ)હ માંહિ તિન ચોવીસીની પ્રતિમા છે તિહાં લિકાલ પુજા થાઈ છે માહામુનિશ્વર દિગંતર સદા સર્વદા વિરાજમાન છઠ્ઠ: રાજા નિત્ય પ્રેતે દેહરે આવી જિનવાણી સાંભલેં દેહરે જઈ નાહી પુજા કરિ મુનિશ્વરને આહાર દાન દેઈને જીમે છઠ્ઠ: તિહા એક જૈન ધર્મનો મહિમા છે બિજા (લિંગ નહીં?) છે એ રીતે સદા જૈનધર્મ વિદ્યમાન છે તારાતંબોલ નગરને આસપાસ મોટી નદિ સિધુ વહે છે તે નદિનો મોટો વિસ્તાર છે એ વાર્તા મુલતાંનનો વાસી ઠાકુર બૂલાચીઈ વાત કહિ તે લચી છે અમ્મદાવાદથી તારાતંબોલનો ઠીક કીધો ત્યારે ૫૬૦૦ કોસ જમી છઠ્ઠ: એ કાગલ આગરાથી લચ્યો આવ્યો તે દેચીને લચો છઠ્ઠ: તિ પૂર્વે બીજે પળ લોકે એ વાતની સાચિ ભરી ઉદેપુરનો વાસી હુબઢ્ઠાતીય કાલુયા રાઘવદાસ કાબિલ ગયો હતો તેણે પળ વાર્તા સાંભલિ હિતિ: ઇતિ વાર્તા સંપૂળ્ણ.

પ્રતિલેખક પરિચય-પ્રતિલેખક વિદ્વાનનું નામ ઉપલબ્ધ નથી. પ્રતિલેખન વર્ષ-વિક્રમ ૧૯મી અનુમાનિત. પ્રતિલેખન સ્થલ-ઉપલબ્ધ નથી. પ્રત પરિચય-પ્રત નં. ૨૮૨૮૨ જે સંપૂર્ણ છે, પ્રતમાં ૯ કૃતિઓનું સંકલન થયેલ છે. પ્રતનું માપ-૨૮.૫x૧૪ સે.મી. છે. કુલ પત્ર સંખ્યા-૭, પંક્તિ સંખ્યા ૧૯-૨૦, પ્રતિ પંક્તિ અક્ષર લગભગ ૩૭-૪૨ છે, પ્રત દશા-પાણીથી વિવર્ણ છે અને અક્ષરોની સ્યાહી ફેલાઈ ગયેલ છે. તેથી કેટલાક શબ્દો દુર્વાચ્ય છે. વાસ્તવિકતાની નજદીક પહોંચવાનો પૂરતો પ્રયાસ કર્યો છે. ન ઉકેલાયેલા અક્ષરો-વાક્યોને બ્રેકેટમાં પ્રશ્નાર્થ સાથે મૂકેલ છે. જે યોગ્ય કરી વાંચવા ભલામણ.

ઉપરોક્ત લેખો વાઢી પ્રતો કોબા-આચાર્યશ્રી કૈલાસસાગરસૂરિ જ્ઞાનમંદિરમાં સુરક્ષિત છે. ઉપરોક્ત લેખો જે ઐતિહાસક છે અને સંશોધન-સંપાદન કરતા વિદ્વાનોને ખુબ જ ઉપયોગી માહિતી પુરી પાડવામાં સહાયભૂત થશે એ આશયથી અહિં પ્રગટ કર્યા છે. લેખો પ્રાય: અપ્રકાશિત હોવા સંભવ છે.

श्रुतसागर

17

सितम्बर-२०१४

तारातंबोलनी चिट्ठी

एक नगरनुं दंतकथा जेवुं वर्णन आपतो एक प्राचीन पत्र

संग्राहक-मुनिराज श्री कांतिसागरजी

“स्वस्ति श्रीगाम अमदावाद महासुभस्थानके पूज्य राधे श्री५ श्री अनेक सर्वे ओपमा लायक तीरथरूप भाई रतनचंद, एतान श्री हेदराबादथी लिखी भाई पदमसीनो प्रणाम वांचसोजी, अमो अमारा कुटुंब सहित दूर देशांतरनी यात्रा करवा सारू सं. १८०५ की सालमां गयेल तेनी हकीकत प्रथम श्री अमदावादथी कोस ४८०० श्रीतारातंबोल शहर छे तेनी विगत संभलावे छे.

१. प्रथम श्री अमदावादथी कोस ३०० आगरा शहर छे.

२. तेहां थकी कोस ३०० श्री लाहोर शहर छे,

३. त्यां थकी कोस १५० श्री मूलतान शहर छे,

४. त्यां थकी कोस ३५० बंदर शहर छे,

५. त्यां थकी कोस ९०० श्री आसापुरी नगरी छे तेना बाजार कोस १२ ना छे,

६. त्यां थकी कोस ७०० गया एटले श्री तारातंबोल शहर छे, तेनी हकीकत संभलावे छे. श्रीमुकुटस्वामीनी मुरती छे, ते मुरती पबासण उपर बीने^१ आधारे छे, ते मुकुटस्वामीनी मुरती चोडी हाथ २८नी छे, तेनो उंचपणो हाथ ३८नो छे, तेना पगना अंगोठा उपर श्रीफल नंग २८ रहे छे, तेनी जात्रा करीने हमें आगल चाल्या ते-

७. तेहां थकी कोस ६०० गया एटले तलाव नग १ मोटो आवे छे तेनी वचेवच श्री अजितनाथजीनो देवरो छे, तेहां अमे नावडामें बेसीने दरसण करवा गया हता त्यां श्री अजितनाथजीनी प्रतिमा चोडी हाथ ६नी छे. तेनो उंचपणो हाथ १०नो छे, तेनी जात्राने हमो आगल चाल्या.

८. त्यां थकी कोस ५०० गयां तेयां तलंगपुर नग्र आवे छे, ते नग्र कोस ५० नो छे. तेहां जीन परसादना देहरा नग २८ छे. तेहांथी आगल चाल्या के श्री चंदाप्रभुजीनुं देवरो मोटो छे. तिहां देरासरजी मध्ये श्रीजिनप्रतिमा नग १२८ छे, तेना दरसण करीने हमं आगल चाल्या.

९. त्यारे कोस ७०० गया के श्री नवापुरी पाटणनामे सेहेर छे.

१०. तेनी आगल कोस ३०० गया एटले बीजु तारातंबोल शहर घणो ज मोटो छे

१. वगर

ते जोवा लायक छे. ते नगरनो कोट कोस ४००नो छे. ते नग्रनो कोट तांबानो छे त्यांना राजानो मेल सपेत धातुनो छे. राजानो नाम धीरसेन माराजा छे. ते वरधमान राज करे छे. त्यां वेपारी लोको हीरा-मोती-माणक-जवार-सोनो-रूपो-रतन सरव वेचे छे, ने सरव आप अपना हाट उघाडा मुकीने सर्वे सरवना घर जाय छे, पण कोइ कोइनी चीज लेवा पामतो नथी. एवा सर्वे लोको मोटा धरमी छे. ते नग्रनो बाजार कोस ६० नो छे. ते नग्र मध्ये श्री जैन परसादना देहरा नग ७०० छे त्याना राजा परजा सरवे जेनधरमी छे. ते जेन वीना बीजा कोइ देवने मानतो नथी. ते प्रतमानी गणती निचे लीखी छे. श्री जेन प्रतिमा १५००० पासाणनी छे, ने ४००० लीला माणकनी छे. तेमां ३४८६ प्रतमायो धातुनी छे. ११९० प्रतमायो एक सरवणी रत्ननी छे. १६ प्रतमायो बावना चंदननी छे, ने ११ प्रतमायो गोरूचंदननी छे, ने ९ प्रतमायो माणकनी आंगली १ प्रमाण छे, ने ५४५ प्रतमायो लाल रत्ननी छे. ने ४८७ प्रतमायो काला रत्ननी छे, ने १ प्रतमा सांचा मोतीनी छे, ने ४ प्रतमायो लाल रत्ननी आंगली १ प्रमाण छे, ने ४ प्रतमायो हीरानी छे, ने ५ प्रतमायो लसणीयानी छे आंगली १ प्रमाण छे. सर्व मिली एकंदर प्रतमा २४७६४ छे. त्यांना राजानो चोक छे ने चोक मध्ये श्रीरीखवदेवजीनो देहरो छे. तेनो उंचपणो कोस ४नो छे. त्यां एक एक दीसायो मंडप नग ९ छे. च्यार दियां मिली मंडप नग ३६ छे ने जिन परसादनो कोट तांबानो छे ने ते कोटना थंभा रूपाना छे. तेने बीजा थांभा सोनाना गंभाराना छे तथा परसाद संघासन सोनाना छे, तथा जडावना छे, संघासण उपर प्रतमायो नग ३ चोविसीनी छे. ते प्रतमायोनो वरन आपआपोना जुदा जुदा रंगनी छे, ते पण सपेत तथा लीलो तथा कालो एवा रंग आपआपना वरण छे.

त्यांनो राजा दिन प्रते निकली पूजा करे छे. ते राजा बहु गुणी छे, तथा जैनधरमी छे. तथा समतावान छे, तथा सीयलवान छे, जसवंत छे, गुणवंत छे, विनेवंत छे सर्वे गुणकरी वीराजमान छे, ते नग्रमध्ये अमो दीवस ४२ रहा हुंता, ने बीजा पण देहरा घणा सारा छे, ते देराना मध्ये प्रतमायो सुवरणनी छे तथा जडावनी छे, गणती नग १३२ छे, तेहां बिजी प्रतमायो नग १०५ छे ते फटकरतननी छे. ते प्रतमायोना दरसन कर्या छे. ते नग्र मध्ये श्रावक महाकुटंबी छे. तथा महाधरमी छे, तप जप मध्ये सरवे पुरण छे. ते देहराना भंडार मध्ये द्रव्य क्रोड ९० नीवेनो छे. ते देहराना भंडार मध्ये जवला गवला तथा बीजा गवलाना ग्रंथ छे, ते ग्रंथोना सलोक १०४००० छे. ते बीजा

श्रुतसागर

19

सितम्बर-२०१४

ग्रंथोना सिलोक १०८००० छे, ते ताडपत्र पर लीखेला छे, तेने कोइ पण पंडीत वांची सकता नथी, ते नग्रना वनमध्ये श्रीशांतिनाथजीनो देहरो छे, ते नग्र मध्ये सांफ बीछुं वाघनो भय घणो छे, ते त्यांथी आगल चाल्या के तेयां श्री रखवदेवजी तथा नेमजी नाम साधुजी रहे छे ते मुनी उमर वरस ९०नी अमो गया त्यारे हुंती, ते सांज उपरे (पहेलां) आहार लेवा निकले छे ते सुझता आहार मिले तो लेवे नहीतर लेवे नही. ते साधुजीना दरसन थयां छे, तयां थकी कोस ६५ गया एटले गंगानग्र छे, ते नग्रना वन मध्ये श्रीरीखवदेवजीनो देहरो छे, तेमां श्री प्रभाचंद्रजी नाम साधु रहे छे, ते मास १ मध्ये बे वार पारणो करे छे. ते जोगवाईनो आहार मिले तो लेणो नही तो बीजे मासे वात गइ, एवा मुनीराजना दरसन थाय छे. त्यांथी आगल चालवानो करता हता के एटले साधुजी अमोने कहो के आगल जासो नही. साथी ने येहांथी कोस ३०० गया एटले पछे एक टांग्रो मुलक आवे छे. एवी हकीकत अमाने श्रीपरभावचंद्रजीये कही एटले अमो सं. १८२१थी सालमां सर्वे जात्रायो करी १६ वरसे कुसलक्षेम घरे आवीया छां. एवा अमाना मोक्षगामीना दरसन थया छे. ए कागल संपूर्ण लिख्यो छे.

नोंध-उपरना पत्रनी नकल मारी पासे जुनीभाषामां तेमज बाळबोध लिपिमां लखेली छे. अने ते लगभग १०० वरसनी लखेली लागे छे.

आ पत्र मां जे जे विगतो आपी छे ते बधी बहु विचारणीय छे. एक ठेकाणे श्रीऋषभदेव भगवाननो प्रासाद ४ कोस उंचो होवानुं लख्युं छे. आथी कोसनो शुं निश्चित अर्थ करवो ए समजातुं नथी. ऐतिहासिक दृष्टि ए पण आनु शुं मूल्य होइ शके ए जोवानुं रहे छे. छतां आ पत्र भाषानी दृष्टि के एवी बीजी कोइ दृष्टि विद्वानोने उपयोगी थइ पडशे एम लागवाथी अहीं छाप्यो छे. एनी सत्यासत्य हकीकत उपर वाचक वर्ग विचार करे अने इतिहासना अभ्यासीओ ए संबंधी कंइ खूलाशो बहार पाडे एवी आशा छे.

(जैन सत्यप्रकाश वर्ष-४ अंक-३)

आ अंकना आ पत्रनी फूटनोंटमां तीर्थमाळां तारातंबोलनी सविस्तर माहिती होवानो उल्लेख कर्यो छे.

तारातंबोलविषयक उल्लेख

संग्राहक-श्रीयुत् सागरमलजी कोठारी

कुछ मास पूर्व 'श्री जैन सत्य प्रकाश' में तारातंबोलनगर विषयक पत्र प्रगट हुए थे। उस समय कहा गया था कि अगर अन्य किसी ग्रंथ में इस घटना से सम्बन्धित साहित्य हो तो प्रकाश में लाया जावे ताकि इस सम्बन्ध की ऐतिहासिक खोज की

जाय। इस पर से एक यति जी द्वारा अपने संग्रह ग्रंथ में-जिसमें उन्होंने विहारी सतसई, कोकशास्त्र, कविता, वैद्यक शास्त्र, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र, आदि अनेक विषयों के साथ कई ऐतिहासिक बातों का भी उल्लेख किया-उसी हस्तलिखित नोंध कोपी को देखते हुवे मुझे यह प्रवास वर्णन मिला जो कि उपरोक्त लेख सदृश होने से प्रकाशनार्थ भेजा है। उक्त कोपी १७वीं शताब्दी की होने का अंदाज किया जाता है, पत्र इस प्रकार है-

“संवत् १६८६ वर्षे पातिसाह साहिज्यां राज्य करै तिवारै वार्ता छे मुलताण वासी, जाति खत्री, नाम ठाकुर विलायत, दूर देशांतरथी आयो ते वार्ता कहे। गुजरात देश मध्ये अहमदाबाद नगरथी ३२५ आगरा, तेहथी ३०० कोस लाहोर, तिहांथी १५० मुलताण, तिहांथी ३०० खंधार, तिहांथी ७०० सांम नगर छे, तिहांथी ८०० सासता नगर बार कोस ने विस्तार छे, तिहांथी ६०० खुरसानसेहर १५ कोस विस्तार छे, तिहांथी १२०० तारातंबोल नगर छे ते ७२ कोस विस्तार छे नगरनो बाजार ४८ कोसनै विस्तार छे, तिहां रोमी पातिसाह राज्य करे छे, ते छ मासे बारणै आवै ते पातिसाह्रै २४ लाख कटक छे, तेहने ३ लाख लूंडा लूंडी छै लोहनो कोट सहिर दोलो छै। तिहांथी ५०० कोस बबर देश छै तिहां हिर रंगाइं, तिहां सूरचंद राज्य करै ते नगर ४० कोसने विस्तारे छे, तिहां समुद्रनो कांठो छे, जैनधर्म छे अद्भुत प्रासाद पोसाल अनेक छे।”
इति... (जैन सत्य प्रकाश वर्ष-६ अंक-६)

नोंध-उपरोक्त छ लेखोमां आवेला स्थान-अंतर दर्शावतो कोठो नीचे मुजब आपवामां आव्यो छे. तेमां चार लेखोमां अमदावादथी अने प्रत नं. १९० मां लाहोरथी आम जुदा-जुदा रूटमां शहेरो तथा अंतर दर्शाविल छे, शहेरोनो क्रम पण बदलायेलो छे, प्रतोमां जे प्राचीन नगरीओना नामो आवेला छे ते वर्तमानमां कया नामे ओळखाय छे, क्यां आवेल छे तेनी विगतो उपलब्ध नथी तेम ज प्रतोमां नगरीओना अंतर कोष अने गाउ लखेल छे तेनुं शुं माप समजवुं ते पण शोध-संशोधननो विषय छे, जेनी सुज्ञ वांचकोए नोंध लेवी. आ नगरी विशे अन्य पण हकीकतो कोईना ध्यानमां होय तो जणाववा विनंती.



શ્રુતસાગર

21

સિતમ્બર-૨૦૧૪

પ્રત નં. ૩૭૩૩૧	પ્રત નં. ૨૮૫૫૩	પ્રત નં. ૧૧૦	પ્રત નં. ૨૮૨૮૨	જૈ.સ.પ્ર. વર્ષ-૪ અંક-૩	જૈ.સ.પ્ર. વર્ષ-૬ અંક-૬
ગામ, શહેર-અંતર-કોસ	ગામ, શહેર-અંતર-કોસ	અંતર-ગાડ	ગામ, શહેર-અંતર-કોસ	ગામ, શહેર-અંતર-કોસ	ગામ, શહેર-અંતર-કોસ
ગુજરાત- શ્રીઅહમદાવાદથી	ગુજરાત- શ્રીઅહમદાવાદથી	લાહોરી	ગુજરાત- શ્રીઅહમદાવાદથી	ગુજરાત- શ્રીઅહમદાવાદથી	
-	૩૨૫-આગરા	-	૩૦૦-આગરા	૩૦૦-આગરા	૩૨૫-આગરા
૩૦૦-મુલતાન	૩૦૦-લાહોર	-	૩૦૦-લાહોર	૩૦૦-લાહોર	૩૦૦-લાહોર
૧૫૦-લાહોર.A	૧૫૦-મુલતાન	૧૫૦-મુલતાન	૧૫૦-મુલતાન	૧૫૦-મુલતાન	૧૫૦-મુલતાન
૩૦૦- સંધાર	૩૦૦-સંધાર	૩૦૦-સંધાર	૩૦૦-સંધાર	૩૫૦-બંદર*	૩૦૦-સંધાર
૧૦૦-ઇસફાનગર	૧૦૦-ઇસપાનગર	૧૦૦-ઇસપત્ર	૧૦૦-ઈસપત્રનગર	૧૦૦-આસાપુરી નગરી#	-
-	૭૦૦-સોમનગર	૭૦૦-સોમનગર	-	૭૦૦-તારાતંબોલ#	૭૦૦-સોમનગર
-	૮૦૦-સામતાનગર	૮૦૦-સતાનનગર	-	૬૦૦-તઢાવ	૮૦૦-સામતાનગર
૬૦૦-સુરયાન	૬૦૦-સુરયાનગર	૬૦૦-સુરયાન	૬૦૦-સુરયાન	૫૦૦-તલંગપુર#	૬૦૦-સુરયાનસેહર
૧૨૦૦- ઇસફ તંબોલનગર	-	૨૦૦-ઈસતંબોલ	૧૨૦૦-અસ્તંબોલ	૭૦૦-નવાપુરી પાટણ#	
૧૪૦૦-વઙ્ગરદેશ	૫૦૦-બરકોટ	૫૦૦-બરકોટ	૫૦૦-બરકોટ	-	
૫૦-આકલનગર	? - તારાતંબોલ	-	૭૦૦-તારાતંબોલ	-	
૭૦૦-તારાતંબોલ	-	૭૦૦- તારાતંબોલ	-	૩૦૦બીજુ તારાતંબોલ	૧૨૦૦-તારાતંબોલ
-	-	-	-	અમદાવાદથી તારાતંબોલ-૪૮૦૦ કોસ.	

નોંધ- * બંદર પુ સંધાર હોઈ શકે છે. # આ નામો અન્ય કોઈ સાથે મેલ્ડ યાતા નથી. A પ્રત નં. ૩૭૩૩૧ માં અન્ય પ્રતોની સરખામણીમાં અહમદાબાદ પછી મુલતાન પહેલા આવે છે અને લાહોર પુ પછી આવે છે એમ લખ્યું છે.

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ग्रन्थसूची प्रोग्राम में कृति-वंशपरिचय

रामप्रकाश झा

कृति का परिचय : कृति शब्द का अर्थ है “किया गया, रचा गया अथवा निर्माण किया गया”。 आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में किसी व्यक्ति के द्वारा गद्य, पद्य अथवा मिश्रित (गद्य पद्य संयुक्त) रूप में किसी खास विषय को लेकर की गई शब्दबद्ध रचना को कृति कहा जाता है.

यदि स्वतंत्र रूप से किसी विषय का प्रतिपादन किया जाता है तो उसे मूल कृति कहते हैं. जैसे- प्रत्येकबुद्ध द्वारा रचित ‘उत्तराध्ययनसूत्र’ मूल कृति है. यदि मूल कृति के ऊपर अनुवाद, टीका, भाष्य, टिबार्थ, बालावबोध आदि किसी भी रूप में कृति की रचना की जाती है, तो उसे मूल कृति की ‘संततिरूप’ कृति कही जाती है. पुत्र-पौत्रादिरूप वह कृति उस मूल कृति परिवार के सदस्य के रूप में जानी जाती है. आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर की अनोखी सूचीकरण प्रणाली व तदनु रूप विशेष रूप से बने लायब्रेरी प्रोग्राम में मूल कृति का स्तर ‘A’ निर्धारित किया गया है तथा उसके पुत्र-पौत्रादि रूप कृतियों का क्रमशः B, C, D, E, F... आदि स्तर निर्धारित किया गया है.

प्रायः सभी ग्रन्थालयों में पुस्तक के ऊपर छपे हुए नाम से अथवा लेखक या सम्पादक आदि के नाम से पुस्तकें ढूँढकर वाचकों को दी जाती हैं. परन्तु आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर की यह विशिष्टता है कि यहाँ विद्वानों, संशोधकों तथा सम्पादकों की सुविधा हेतु पुस्तक नाम के आधार पर, कृति के आधार पर, विद्वान तथा कृति रचना वर्ष के आधार पर, यहाँ तक कि कृति के प्रारम्भिक व अन्तिम पाठ के आधार पर भी हस्तप्रत, पुस्तक आदि की शोध की जाती है. पुस्तक के ऊपर छपे हुए नाम को प्रकाशन नाम, हस्तप्रत के ऊपर प्रतिलेखक के द्वारा लिखे गए नाम को हस्तप्रत नाम तथा कर्ता के द्वारा दिए गए नाम को कृति नाम कहा जाता है.

इस ज्ञानमन्दिर में उपलब्ध प्रत्येक कृति का मुख्य नाम, प्रचलित नाम, कर्तानाम, भाषा, स्वरूप, प्रकार, कृति परिमाण, आदि-अन्तिमवाक्य, रचनास्थल, रचनाकाल, (वर्ष, मास, पक्ष, दिन आदि) रचना प्रशस्ति के अन्तर्गत प्राप्त विशिष्ट घटनाओं, राजादि का वर्णन, संघयात्रा आदि का वर्णन, गुरुपरंपरादि की सूचना तथा वह कृति

जिस प्रकाशन, हस्तप्रत अथवा अंक में मिलती हो, उसकी सूचना वाचकों को उपलब्ध करायी जाती है।

कृति का स्वरूप एवं उसकी रचनाशैली : किसी भी परंपरागत भारतीय कृति के प्रारम्भ में प्रायः मंगलाचरण होता है। मंगलाचरण में सामान्यतः कर्ता अपने इष्टदेव अथवा गुरु का स्मरण या उनके गुणों का संकीर्तन करता है। कोई कृति सर्ग, अध्याय, अध्ययन, परिच्छेद आदि परिमाणों में विभक्त-उपविभक्त होती है, तो कोई सम्पूर्ण अविभाजित कृति होती है। कुछ पद्यबद्ध कृतियों में श्लोकों, गाथाओं या सूत्रों का एक निश्चित अनुक्रम होता है, जो कृति के प्रारम्भ से अंत तक एक समान चलता है, जबकि कुछ कृतियों में प्रत्येक सर्ग, अध्याय आदि के बाद यह क्रम बदल जाता है अर्थात् पुनः एक से प्रारम्भ होता है।

जबकि गद्यबद्ध कृतियों में श्लोक, गाथादि नहीं होते, मात्र सर्ग, अध्याय, अध्ययन आदि होते हैं। कभी-कभी कृति के अध्याय/अध्ययन आदि के अपने स्वतन्त्र नाम भी होते हैं। उदाहरण के लिए-दशवैकालिकसूत्र के प्रथम अध्ययन का नाम द्रुमपुष्पिका अध्ययन है, द्वितीय अध्ययन का नाम श्रामण्यपूर्विक अध्ययन है। परन्तु तत्त्वार्थाधिगमसूत्र में प्रथम अध्याय, द्वितीय अध्याय आदि है, किसी भी अध्याय का कोई नाम नहीं है।

कृति की रचनाशैली अनेक प्रकार की होती है, जैसे- महाकाव्य, नाटक, सूत्र, चंपू, सट्टक, स्तोत्र, स्तव, रास, ढाल, चौपाई, छंद, सज्जाय, स्तवन, स्तुति, चैत्यवंदन, पद, धवल, झूलणा, झीलणा, हरियाली इत्यादि। इसप्रकार की रचनाशैली प्रायः मूल कृति में पाई जाती है, जो टीकादि स्वरूप से भिन्न होती है।

कृति के अन्त में प्रायः रचना प्रशस्ति हुआ करती है। कभी-कभी कृति के प्रत्येक अध्याय आदि के अन्त में भी रचना प्रशस्ति होती है, जिसके अन्तर्गत कर्ता का विस्तृत परिचय, उसकी गुरु-परंपरादि का परिचय, कृति का रचनास्थल, रचनावर्ष आदि का उल्लेख होता है। कभी-कभी कृति के प्रारंभ में भी कर्ता द्वारा अपने वंश, गुरु आदि का परिचय प्रस्तुत किया जाता है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर के लायब्रेरी प्रोग्राम की विशिष्टता :

यहाँ के कम्प्युटरीकृत लाइब्रेरी प्रोग्राम की विशिष्टता यह है कि यहाँ आनेवाले विद्वानों, संशोधकों तथा वाचकों को इसके माध्यम से किसी भी कृति की सम्पूर्ण

जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त हो जाती है। यदि किसी वाचक को उत्तराध्ययनसूत्र के ऊपर रचित सभी टीकाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करनी हो तो लायब्रेरी प्रोग्राम की कृति माहिती में उत्तराध्ययनसूत्र+टीका टाईप करके शोध करने से उसकी टीकारूप सभी पुत्र कृतियों की सूची देखने को मिलती है। उस सूची में वांछित टीका के विषय में विस्तृत जानकारी, जैसे-उसकी भाषा, उसके कर्ता, कर्ता की गुरुपरम्परा, उस कृति का आदिवाक्य, अन्तिमवाक्य, उसके परिमाण, उसका रचना वर्ष; इसके अतिरिक्त वह कृति कहाँ से प्रकाशित हुई है?, उसके अतिरिक्त वह कृति किस पुस्तक अथवा सामायिक के किस अंक के कौन से पृष्ठ पर प्रकाशित है? यदि वह कृति अप्रकाशित है तो कौन से हस्तप्रत के किस पृष्ठ पर उपलब्ध है? इस प्रकार की सारी जानकारियाँ कुछ ही क्षणों में प्राप्त हो सकती है।

इस सुविधा से वाचक को उनके अभ्यास हेतु वांछित कृति से सम्बन्धित प्रकाशन, मैगजिन व हस्तप्रत अतिशीघ्र प्राप्त हो सकते हैं, अपने बचे हुए समय का सदुपयोग वे उनके द्वारा किये जानेवाले अध्ययन, अनुवाद, संशोधन, सम्पादन आदि कार्यों में कर सकते हैं, जिससे उनके कार्य में गति मिलती है।

यदि वाचक को कृति का नाम, कर्ता का नाम आदि कुछ भी याद न हो, मात्र कृति का कुछ प्रारंभिक अंश ही याद हो, तो उसके आधार पर भी कृति की शोध की जा सकती है। जैसे - वाचक को यदि 'संजोगा विष्णुमुक्कस्स अणगारस्स' इतना ही याद हो तो इसके आधार पर उन सभी कृतियों की सूची देखी जा सकती है, जिनका प्रारम्भ उपर्युक्त वाक्य से होता हो, इस प्रकार वाचक को इस आदिवाक्य से प्रारम्भ होनेवाले उत्तराध्ययनसूत्र मूल कृति तथा उस कृति से जुड़े प्रकाशनों, हस्तप्रतों तथा अंकों के विषय में शीघ्र ही जानकारी प्राप्त हो सकती है।

यदि वाचक को उत्तराध्ययनसूत्र के ऊपर भावविजयजी के द्वारा रचित अधिरोहिणी वृत्ति चाहिए तो कृति नाम के बॉक्स में उत्तराध्ययन तथा विद्वान नाम के बॉक्स में भावविजय टाईप कर शोध करने से उपर्युक्त वृत्ति क्षणमात्र में मिल जाती है।

इस प्रकार ज्ञानमन्दिर का यह लायब्रेरी प्रोग्राम वाचकों तथा संशोधकों के लिए एक कल्पवृक्ष के समान है, जिसकी सहायता से उनका अध्ययन, संशोधन आदि कार्य हेतु अत्यल्प समय में अधिकाधिक सूचनाएँ प्राप्त हो सकती है। यदि वाचक को किसी विद्वान के द्वारा संशोधित अथवा सम्पादित प्रकाशनों में से कोई प्रकाशन चाहिए तो प्रकाशन नाम में पुस्तक का नाम तथा विद्वान नाम में उस विद्वान का नाम देकर शोध

करने से उपर्युक्त सूचनाएँ तुरन्त प्राप्त हो सकती है।

यदि किसीको आचार्य सिद्धसेनदिवाकरसूरिजी द्वारा रचित द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका के ऊपर आचार्य लावण्यसूरि द्वारा रचित किरणावली वृत्ति चाहिए तो कृति नाम में 'द्वात्रिंशिका' टाईप कर यह शब्द नाम में 'कहीं भी आया हो', ऐसा विकल्प चयन करते हैं और विद्वान नाम में लावण्यसूरि टाईप कर शोध करते हैं; तो ऐसी सभी कृतियों की सूची कम्प्यूटर स्क्रीन पर आ जाती है।

जिसके नाम में आगे, पीछे या बीच में, कहीं भी 'द्वात्रिंशिका' शब्द आया हो। उस सूची में कर्सर को ऊपर-नीचे ले जाने से द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका नामक कृति मिल जाती है। उसके ऊपर कर्सर रखकर उसके सामने विद्वान के कोष्ठक में जहाँ भी लावण्यसूरि का नाम मिले, तो वह कृति अवश्य ही द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका की किरणावली वृत्ति ही होगी। उस कृति से जुड़े हुए प्रकाशनों, हस्तप्रतों तथा अंकों की सूचनाएँ व जिस पृष्ठ पर वह कृति उपलब्ध हो, उसकी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। ये सूचनाएँ विद्वानों और संशोधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होती हैं।

इसके अतिरिक्त मूल कृति पर कर्सर रखकर उसके ऊपर लिखी गई टीका, अनुवाद, टबार्थ आदि जितनी भी पुत्र कृतियाँ ज्ञानमन्दिर में संग्रहित हैं, वे सभी कृतियाँ उसकी शाखा-प्रतिशाखा सहित सम्पूर्ण वंशवृक्ष के रूप में देखने में आती हैं। उसमें से वांछित पुत्रकृति पर कर्सर रखकर उससे जुड़े प्रकाशन, हस्तप्रत अथवा अंक तथा उन सभी पुस्तकों के नंबर, हस्तप्रतों के नंबर आदि देखने को मिलते हैं। इस प्रकार वह कृति जिस प्रकाशन, हस्तप्रत अथवा सामायिक के साथ जुड़ी हुई हो, वह वाचक को उपलब्ध कराया जाता है।

कृति परिवार का निर्माण व कृति-वंश परिचय : कृति का वंशवृक्ष बनाने हेतु लायब्रेरी प्रोग्राम में सर्वप्रथम मूल कृति की प्रविष्टि की जाती है। उसके बाद उसे योग्य प्रकाशन, हस्तप्रत, सामायिक आदि के साथ जोड़ दिया जाता है। मूल कृति को पिता, अर्थात् कृति-परिवार का मुखिया माना जाता है तथा उस कृति के अनुवाद, टीका, विवेचन, टबार्थ, बालावबोध आदि को उसकी पुत्र-पौत्रादि सन्ततिरूप कृति मानी जाती है।

उदाहरण के लिए भद्रबाहुस्वामी के द्वारा रचित कल्पसूत्र को मूल (पिता कृति) माना गया है, उपाध्याय विनयविजयजी द्वारा रचित सुबोधिका टीका को उसका पुत्र

बनाया गया है तथा सुबोधिका टीका का साराभाई मणिलाल नवाब कृत गुजराती अनुवाद को सुबोधिका टीका का पुत्र तथा कल्पसूत्र का पौत्र बनाया गया है. जिस प्रकार एक पिता के अनेक पुत्र होते हैं, उसी प्रकार एक मूल कृति की अनेक पुत्र कृतियाँ होती हैं. उन पुत्र कृतियों की भी अनेक पौत्र व प्रपौत्र कृतियाँ होती हैं. इस प्रकार जैसे एक व्यक्ति का परिवार क्रमशः बढ़ता रहता है, उसी प्रकार एक मूल कृति के पुत्र-पौत्रादि बढ़ते रहने के कारण उसका परिवार भी बढ़ता है. और एक समय आने पर विशाल वंशवृक्ष बन जाता है.

परन्तु जिस प्रकार उस परिवार का छोटे से छोटा सदस्य भी उस परिवार के मुखिया के नाम से जाना जाता है, उसी प्रकार एक कृति-परिवार के छोटे से छोटे सदस्य का सम्बन्ध भी कहीं न कहीं उस परिवार के मुखिया अर्थात् उस मूल कृति के साथ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अवश्य जुड़ा होता है.

इस सम्बन्ध में एक उदाहरण प्रस्तुत है-

कृति-वंशवृक्ष

कल्पसूत्र मूल
कर्त्ता भद्रबाहु स्वामी



कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका
उपा० विनयविजयजी गणि



कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका का हिस्सा गणधरवाद
उपा० विनयविजयजी गणि



कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका के हिस्से गणधरवाद पर हिन्दी प्रवचन
आ० पद्मसागरसूरि



कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका के हिस्से गणधरवाद पर हिन्दी प्रवचन का गुजराती
अनुवाद
अशोक शाह

श्रुतसागर

27

सितम्बर-२०१४

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि भद्रबाहुस्वामी द्वारा रचित कल्पसूत्र मूल के ऊपर उपाध्याय विनयविजयजी द्वारा रचित सुबोधिका टीका है। सुबोधिका टीका का एक हिस्सा है-गणधरवाद, गणधरवाद के ऊपर आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा दत्त प्रवचन संशय सब दूर भये, उस प्रवचन का अशोक शाह कृत गुजराती अनुवाद आतम पाम्यो अजवाळुं का सम्बन्ध कहीं न कहीं कल्पसूत्र से स्थापित हो जाता है। अर्थात् वह कल्पसूत्र के परिवार के एक सदस्य के रूप में प्रस्थापित है।

इस प्रकार आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर की सूचना पद्धति के आधार पर प्रत्येक कृति के साथ योग्य न्याय करते हुए वाचक, संशोधक व सम्पादक को उनकी वांछित कृति से सम्बन्धित प्रकाशन, अंक, हस्तप्रत आदि की सूचनाएँ अल्पतम समय में उपलब्ध करायी जाती हैं और किसी भी स्तर की संततिरूप कृति का उस परिवार के मुखिया के साथ किसी न किसी रूप में सम्बन्ध स्थापित कर उसे उस परिवार के सदस्य के रूप में मान्यता दी जाती है।

अगले अंक में “हस्तप्रतों में उपलब्ध विद्वानों के प्रकार एवं उसका परिचय” प्रस्तुत किया जाएगा।

(क्रमशः....)



पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्तकुमार

पुस्तक नाम	: जैन आचार मीमांसा में जीवन प्रबन्धन के तत्त्व
कर्ता	: मुनि श्री मनीषसागरजी म. सा.
प्रकाशक	: प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड, शाजापुर-४६५००१
प्रकाशन वर्ष	: ईस्वी सन् २०१३
मूल्य	: ४००/-
भाषा	: हिन्दी

मुनिश्री मनीषसागरजी म. सा. द्वारा लिखित जैन आचार मीमांसा में जीवन प्रबन्धन के तत्त्व एक विशालकाय ग्रन्थ है। पूज्यश्री ने विशाल जैनसाहित्य का आलोकन कर उसमें से अमृतमयी जीवन प्रबन्धन के तत्त्वों को निकाला है। १४ अध्यायों में विभक्त प्रस्तुत ग्रन्थ में जीवनोपयोगी जीवन प्रबन्धन, शिक्षा प्रबन्धन, शरीर प्रबन्धन, अभिव्यक्ति प्रबन्धन, तनाव प्रबन्धन, पर्यावरण प्रबन्धन, समाज प्रबन्धन, अर्थ प्रबन्धन, भोगोपभोग प्रबन्धन, धार्मिकव्यवहार प्रबन्धन एवं आध्यात्मिकविकास प्रबन्धन जैसे समसामयिक विषयों को एक-एक अध्ययन में बड़े ही सूक्ष्मतापूर्वक विवेचित किया गया है। वैसे तो इस ग्रन्थ का प्रत्येक अध्याय एक पूर्ण ग्रन्थ है, क्योंकि उसमें न केवल उस-उस विषयक जैन साहित्य में आगत विषयों का संकलन किया गया है, अपितु उसका वर्तमान सामाजिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कर जीवन की गुणवत्ता को संवारने में उसकी उपयोगिता और आवश्यकता भी प्रतिपादित की गई है। इनमें से प्रत्येक विषय से संबंधित अलग-अलग सूचनाएँ तो मिलती थी किन्तु एक विषय समूह के रूप में इन सभी को एक साथ कलमबद्ध करके एक सूत्र में पिरोना अपने-आपमें असाधारण उपलब्धि है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पूज्य मुनिश्री का शोध प्रबन्ध है। इस शोध प्रबन्ध पर उन्हें जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन संकाय द्वारा पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पूज्यश्री ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि जीवन प्रबन्धन के तत्त्व केवल पाश्चात्य

श्रुतसागर

29

सितम्बर-२०१४

देशों की खोज नहीं है वरन् जैन धर्म दर्शन में भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। आज जीवन प्रबन्धन शब्द हमें आधुनिक लगता है, किन्तु जैन धर्म दर्शन की परम्परा तो सम्यक् जीवनशैली की अनादिकाल से पोषक रही है, और इसी बात को पूज्यश्री ने समाज के समक्ष विस्तारपूर्वक उपस्थापित किया है।

जैनदर्शन केवल सिद्धांतवादी ही नहीं, अपितु प्रयोगवादी भी है। यह हमें जीवन जीने की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है। जैन आचार मीमांसा में एक ओर व्यक्ति को आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से आत्मोन्नति के शिखर तक पहुँचने की प्रेरणा दी गई तो दूसरी ओर व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से अपने वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का संतुलित विकास करने की नीतियाँ भी निर्देशित की गई हैं। पूज्यश्री ने जैन आचारग्रन्थों का सम्यक् परिशोधन कर इसमें निहित प्रबन्धनसूत्रों को समाज के समक्ष उपस्थित करके पुनः प्रतिष्ठापित करने का सुन्दर प्रयास किया है।

“भौतिक और आर्थिक विकास यद्यपि जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं, फिर भी उनका सम्यक् प्रबन्धन तो नैतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन मूल्यों पर ही आधारित होगा” पूज्यश्री का यह कथन न केवल पूर्णतया सत्य है, बल्कि यही भारतीय संस्कृति का सारभूत उद्घोष है। इस ग्रन्थ के स्वाध्याय से व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन प्रबन्धन की समुचित प्रेरणा प्राप्त होगी। जीवन प्रबन्धन विषय को अपने शोधकार्य का विषय बनाकर पूज्य मुनिश्री ने जिनशासन को एक बहुमूल्य कृति प्रदान की है। भविष्य में भी जिनशासन की उन्नति एवं श्रुतसेवा में समाज को उनका अनुपम योगदान प्राप्त होता रहेगा ऐसी शुभेच्छा सहित कोटिशः वन्दन।



नाकोड़ातीर्थ में राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी का ८०वाँ जन्मोत्सव मनाया गया

डॉ. हेमन्तकुमार

परम पूज्य राष्ट्रसन्त श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराज साहब का 80वाँ जन्म महोत्सव श्री नाकोड़ाजी तीर्थ पर पूर्ण धार्मिक वातावरण में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। भक्ति वन्दना के साथ प्रारम्भ हुए जन्म महोत्सव में देशभर से पधारे हजारों श्रद्धालुओं एवं भक्तगणों का श्री नाकोड़ाजी तीर्थ के अध्यक्ष श्री अमृतलालजी जैन स्वागत किया।

इस मंगलमय प्रसंग पर राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एच. आर. पवार, गुजरात के पूर्व गृहमंत्री श्री प्रफुल्लभाई पटेल, प्राकृत भारती अकादमी के संस्थापक एवं एस.ई.बी.आई. के पूर्व अध्यक्ष श्री डी. आर. मेहता, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अग्रज श्री सोमाभाई मोदी, स्थानीय विधायक, कोबातीर्थ के ट्रस्टीगण एवं अनेक गणमान्य महानुभावों ने पूज्यश्री के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना की।

पूज्य मुनिप्रवर श्री विमलसागरजी ने पूज्य गुरुदेवश्री के जीवन कवन का मार्मिक परिचय दिया एवं कार्यक्रम का बड़ा ही प्रभावशाली संचालन किया। पूज्य पंन्यास श्री देवेन्द्रसागरजी, पूज्य पंन्यास श्री हेमचंद्रसागरजी, पूज्य पंन्यास श्री विवेकसागरजी, पूज्य गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी, पूज्य मुनिप्रवर श्री महापद्मसागरजी एवं पूज्य मुनिप्रवर श्री पुनीतपद्मसागरजी ने पूज्य आचार्यश्री के संयम जीवन की विशेषताओं का वर्णन करते हुए अपनी श्रद्धाभक्ति एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य भगवन्त ने उपस्थित जन समूह को प्रतिबोधित करते हुए कहा कि साधुओं का जन्मदिवस तो जिस दिन उसकी दीक्षा हुई हो वही होता है। कोई भी व्यक्ति का केवल अच्छी वाणी बोलने से महान नहीं होता है, उसे महान तो उसके व्यवहार, कार्य, आचरण ही बनाते हैं। मैं आज जो भी हूँ वह सब गुरुकृपा से ही हूँ।

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि गुरु का आशीर्वाद मुझे सदैव मिलता रहा है। आज का दिन मंगलकारी इसलिए नहीं है कि आज मेरा जन्म हुआ है बल्कि आज का दिन तो मंगलकारी इसलिए है कि आज अकबर प्रतिबोधक, जिन

श्रुतसागर

31

सितम्बर-२०१४

शासन के महान आचार्य जगद्गुरु विजय हीरसूरिजी महाराज साहब की पुण्यतिथि है। उनका जीवन कितना महान था इसका इतिहास साक्षी है। मेरे लिए तो आप सभी बस ऐसी भावना व्यक्त करें कि मेरा मृत्यु महोत्सव बन जाए, मेरा बार-बार जन्मोत्सव नहीं मनाया जाए, मेरे भव का विसर्जन हो। पूज्यश्री की जन्मभूमि अजीमगंज श्रीसंघ की ओर से निर्मित पूज्यश्री के जीवनझांकी की सी.डी. प्रदर्शित की गई।

इस मंगलमय अवसर पर जीवदया के लिए अनेक कार्यक्रमों की घोषणा की गई। मन्दिर व धर्मशालाओं को सुन्दर ढंग से सजाया गया था। श्रद्धालुओं के लिए सुन्दर आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी। सभी कार्यक्रम पूर्ण धार्मिक वातावरण में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

**राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी का अगला चातुर्मास
सेटेलाइट जैन श्वे. मू. पू. संघ, अहमदाबाद में घोषित**

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य देव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी म. सा. का वर्ष २०१५ का चातुर्मास श्री सेटेलाइट जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, अहमदाबाद में होना निश्चित हुआ है। सेटेलाइट संघ के अग्रणियों ने श्री नाकोड़ाजी तीर्थ पर पूज्यश्री से निवेदन किया कि आप अपने शिष्य-प्रशिष्यों के साथ वर्ष २०१५ के चातुर्मास का लाभ हमारे संघ को प्रदान करें। सेटेलाइट संघ की भावना को देखते हुए पूज्यश्री ने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। पूज्यश्री की स्वीकृति मिलते ही उपस्थित सभी श्रद्धालु आनन्दित होकर झूमने लगे।

**राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी के ५ शिष्य-प्रशिष्यों को
आचार्य पदवी प्रदान की जाएगी**

श्री नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष श्री अमृतलालजी जैन ने पूज्य आचार्य देव श्री पद्मसागरसूरिजी म.सा. से निवेदन किया कि आप अपने शिष्य-प्रशिष्यों में से जो योग्य हैं उनके आचार्य पद प्रदान करने का कार्यक्रम का लाभ हमारे संघ को प्रदान करें तथा तिथि की घोषणा करें।

पूज्यश्री ने उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए अपने ५ शिष्य-प्रशिष्यों को १ दिसम्बर, २०१४ को आचार्य पदवी प्रदान करने की घोषणा की। आचार्य देव ने पंन्यास श्री देवेन्द्रसागरजी म.सा. पंन्यास श्री हेमचंद्रसागरजी म.सा., पंन्यास श्री विवेकसागरजी म.सा., पंन्यास श्री अजयसागरजी म.सा. एवं मुनि श्री विमलसागरजी म.सा. को आचार्य पद से विभूषित करने की घोषणा की।

SHRUTSAGAR

32

SEPTEMBER-2014

वैराग्य वर्द्धक एवं जीवनोपयोगी तीन ग्रंथरत्नों का विमोचन संपन्न

पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी म. सा. द्वारा लिखित चिंतननी केडी तथा संशय सब दूर भए एवं आचार्य श्री भद्रगुप्तसूरिजी म. सा. द्वारा लिखित तारा दुःखने खंखेरी नांख का आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर द्वारा पुनः संपादन है.

उसका विमोचन राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी म. सा. के जन्मोत्सव के प्रसंग पर नाकोड़ाजी तीर्थ पर न्यायमूर्ति श्री एच. आर. पवार, पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, श्री डी. आर. मेहता, जयपुर, श्री प्रफुल्लभाई पटेल, पूर्व गृहमंत्री गुजरात सरकार, श्री सोमाभाई मोदी एवं श्री अमृतलालजी जैन अध्यक्ष, श्री नाकोड़ाजी तीर्थ के करकमलों से सम्पन्न हुआ.

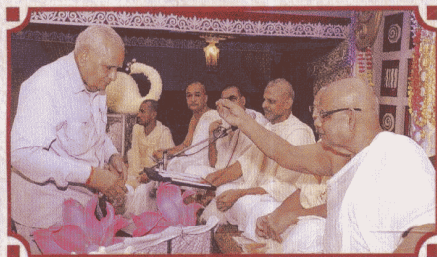
कोबातीर्थ में पर्वाधिराज पर्युषण धार्मिक वातावरण में सम्पन्न

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में दिनांक २२ अगस्त, १४ को जैनशासन का महापर्व पर्युषण धार्मिक वातावरण में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ. परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब के शिष्य जापमय आचार्य श्री अमृतसागरसूरीश्वरजी म. सा. एवं पूज्य साध्वीजी भगवन्तों की उपस्थिति में प्रतिदिन प्रातःकालीन एवं संध्याकालीन सामायिक-प्रतिक्रमण में सैकड़ों साधक उपस्थित होकर आत्म साधना करते रहे.

जन्मवांचन एवं सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में बड़ी संख्या में आराधकों ने लाभ लिया. मन्दिर में प्रतिदिन आकर्षक आंगी की गई. श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा की ओर से साधकों के आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी. सभी कार्यक्रमों को धार्मिक वातावरण में हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न कराने में श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के ट्रस्टीगण एवं कार्यकर्ताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई.



राजस्थान की पुण्यधरा श्री नाकोडातीर्थ में परम पूज्य गुरुभगवंतश्री का ८०वाँ जन्मदिवस के पावन प्रसंग की झलक



TITLE CODE : GUJ MUL 00578. SHRUTSAGAR (MONTHLY). POSTAL AT. GANDHINAGAR. ON 15TH OF EVERY MONTH. PRICE : RS. 15/- DATE OF PUBLICATION SEPTEMBER 2014

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबातीर्थ के पवित्र प्रांगण में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के कुछ यादगार पल



To,

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर ३८२००७
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२, फेक्स (०७९) २३२७६२४९

Website : www.kobatirth.org

email : gyanmandir@kobatirth.org

**PRINTED, PUBLISHED AND OWNED BY : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA,
PRINTED AT : NAVPRABHAT PRINTING PRESS. 9-PUNAJI INDUSTRIAL ESTATE,
DHOBHIGAT, DUDHESHWAR, AHMEDABAD-380004 PUBLISHED FROM : SHRI MAHAVIR
JAIN ARADHANA KENDRA, NEW KOBA, TA. & DIST. GANDHINAGAR, PIN : 382007, GUJARAT.
EDITOR : KANUBHAI LALLUBHAI SHAH.**

For Private and Personal Use Only